International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialsciencejournal.in
Volume 2; Issue 4; April 2016; Page No. 86-87

भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना

Tulsi Chouhan
Assistant Professor, Department of History, Vivekananda College, Delhi University, Delhi, India

प्रस्तावना

एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप के मध्य व्यापार व वाणिज्यिक आधुनिक युग भी कोई नवीन प्रवृत्ति नहीं है अपितु प्राचीनकाल से ही हम देख सकते हैं कि भारत के व्यापारिक संबंध रोमन साम्राज्य से थे। समय-समय पर वंश व शासक बदलते रहे किंतु व्यापारिक आवागमन निर्वाद गति से चलता रहा। यूरोप में वाणिज्यवाद और भौगोलिक खोजों के पश्चात तो मानों इस व्यापारिक गतिविधियों के पंख लग गए। यूरोप के अधिकतर देश विश्व के सभी स्थानों में व्यापार करने के लिए पहुंचे। और इसी प्रकार भारत में प्रमुख यूरोपीय शक्तियों का आगमन हुआ। जिनमें पूर्तगाली, बिटिश, फ्रैंच, डच और डेनिस आदि देश शामिल थे। इस बात से इनकार करना संभव नहीं है। आरंभ में इन सभी व्यापारिक कंपनियों का उद्देश्य मात्र अधिक से अधिक व्यापारिक लाभ करना ही था न कि भारत में अपना राजनैतिक आधिपत्य जमाना।

लेकिन यह भी सत्य है कि 17वीं शताब्दी के अंत से ही इन व्यापारिक कंपनियों की महत्वाकांक्षाएं बढ़ने लगी। आरंभ में आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण इनका उद्देश्य मात्र इतना ही था कि अपनी प्रतिस्पर्धी अन्य कंपनियों को भारत से बाहर किया जाए और इस कार्य में सफल हुई अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी।

18वीं शताब्दी के आरंभ में या यूं कहें कि औरंगजेब के मृत्यु के पश्चात भारत में कोई भी केंद्रीय सत्ता नहीं थी। और यहां नए-नए राज्यों जैसे बंगाल, हैदराबाद, कर्नाटक, अवध आदि का उदय हुआ। इसके साथ-साथ कुछ और क्षेत्रीय शक्तियां भी थी जैसे-मराठा, मैसूर, जाट व राजपूत आदि। इतिहास में सर्वथा की भांति कि जब-जब किसी केंद्रीय सत्ता का अभाव रहता है सभी क्षेत्रीय शक्तियां आपसी संघर्ष में ही अपना समय व्यतीत करती है। इस अवसर का महत्व समझते हुए अंग्रेजी कंपनी ने बंगाल को 1764 में जीतकर अपना प्रभाव बढ़ाया। हैदराबाद के निजाम को भी अपने प्रभाव में लिया और इसके पश्चात कंपनी को यह समझने में तनिक भी देर न लगी कि भारतीय राज्यों की बड़ी से बड़ी सेना को भी षड्यंत्रों और कूटनीति का सहारा लेकर छोटी सी सेना भी हरा सकती है। जैसे ही यह रहस्यमयी बात अंग्रेजों को समझ आई। इसके पश्चात उन्होंने तमाम राज्यों को जीतने में इन्हीं का सहारा लिया। मैसूर को जीतने के लिए निजाम व मराठा का सहारा लिया तो मराठों को जीतने के लिए अन्य देशीय राज्यों का सहारा लिया। 1818 में मराठा विजय के पश्चात 1849 में पंजाब को भी ब्रिटिश भारत में मिला लिया गया।

लेकिन ऐसा नहीं है कि सदैव ही भारतीय रियासतों को अपने अधीन लाने के लिए उन्हें तलवार उठानी पड़ी। सहायक संधि और व्यपगत के सिद्धांत का सहारा लेकर भी कंपनी ने अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाया।

यह सत्य है कि कंपनी को राज्य विस्तार के क्रम में अनेक योग्य नेतृत्व जैसे क्लाईव, वैलेजली, हैस्टिंगस और डलहौजी जैसे योग्य गवर्नर जनरल प्राप्त हुए। साथ ही साथ आर्थर वैलेजली व जनरल लेख, मालक्म, एलफिस्टन, आउट्रम जैसे योग्य सेनापति और प्रशासक भी प्राप्त हुए किंतु इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि तत्कालीन भारत में हैदरअली, टीपू सुल्तान, महाजयी सिंधिया, बाजीराव, रणजीत सिंह जैसे कुशल व शक्तिशाली शासक थे और यह भी सत्य है कि न तो इनमें बुद्धिता की कमी थी और न इनके तलवार की धार में कमी थी। कमी थी तो इस बात की थी कि इन्होंने अंग्रेजों के समान घटिया राजनीतिक चालों और षड्यंत्रों का सहारा नहीं लिया और यहीं से इनके राज्य का सूर्यास्त हो गया। हमें ऐसा कोई अवसर शायद ही देखने को मिले जिसमें कंपनी के अधिकारियों ने कंपनी के खिलाफ जाकर भारतीय राज्यों की मदद की हो और न ही भारतीय शासकों ने अंग्रेजों की भांति धन संपत्ति का लालच देकर अंग्रेजों को कंपनी के खिलाफ षड्यंत्र करने के लिए प्रेरित किया।

किंतु इसके विपरीत अंग्रेजों ने सदैव भारतीयों को अपने ही राज्य के साथ गद्दारी करने के लिए प्रेरित किया। माना जाता है कि अंग्रेज भारतीय राज्यों से इसलिए जीत सके क्योंकि उनके पास आधुनिक सेना व आधुनिक हथियार थे परंतु अंग्रेजों की सेना इतनी ही मजबूत थी तो वो अफगानिस्तान को क्यों नहीं जीत पाए। वजह साफ थी कि क्योंकि यहां उन्हें बंगाल की भांति कोई गद्दार मीर कासिम नहीं मिला।

अंत में उपरोक्त विवरण के आधार पर यही कहा जा सकता है कि अंग्रेजों ने आदर्शवाद के स्थान पर यथार्थवाद का सहारा लिया और उचित अनुचित से अधिक अपने उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित किया जो कि भारत में अंग्रेजी राज की स्थापना का प्रमुख मंत्र बना।

References

1. Thompson, Garratt. Ris and Fulfilment of British Rule in India.
2. Dodwell HH. Combridge history of India, Vol. v.d
3. Sardesai GS. New History of Maratha People.
4. Sarkar JN. Fall of the Mugahal empire, 4.